आज की मुरली पर विचार-सागर-मंथन ---------- Date: 25-06-2014

बाबा ने कहा, बाप उस रथ में आते हैं, जिसने पहले-पहले भक्ति शुरू की, जो नम्बरवन पूज्य था फिर पुजारी बना हैं, यह राज सबको स्पष्ट करके सुनाओ.

कैसे स्पष्ट करेंगे?

हम सब आत्माये असूल में परमधाम या मूलवतन में रहती हैं. वहॉ से हम सब आत्माये यहॉ सृष्टि चक्र में नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं. परमधाम में हम आत्माये परमपिता-परमात्मा के साथ रहते हैं. वहॉ कोई पार्ट चलता नहीं. आत्माये यहॉ धरती पर आकर शरीर धारण कर पार्ट बजाते हैं.

शिवबाबा ने बताया हैं कि परमधाम से सबसे पहले ब्रहमाबाबा की आत्मा पार्ट बजाने आती हैं. इनका फ़र्स्ट पार्ट सतयुग का फ़र्स्ट प्रिन्स, श्रीकृष्ण के रूप में के शुरू होता हैं, फिर वही बड़ा हो कर राधे के साथ स्वयंवर के बाद सतयुग का पहला महाराजा नारायण कहलाते हैं और राधे ही लक्ष्मी, सतयुग की महारानी बनती हैं. इस तरह से ब्रहमाबाबा की आत्मा ही नम्बरवन पूज्य आत्मा कहलाती हैं, क्योंकि इस सृष्टि रूपी ड्रामा के आदि में सबसे पहला पार्ट इनका हैं.

शिवबाबा ने आगे बताया हैं कि जब त्रेतायुग पूर्ण होता हैं और द्वापर शुरू होता हैं तो यही देवी-देयताओं कि आत्माये वाम मार्ग में जाती हैं मतलब की देही-अभिमानी से देह-अभिमान में आती हैं. आत्माये देह-अभिमान में आने से माया से हार खाकर विकारों में फँसती जाती हैं और दुखी होती रहती हैं.

दुखी आत्माये दुख से मुक्त होने के रास्ते ढूँढती हैं. तब उन्हें भगवान (परमात्मा) की याद आती हैं कि कभी उसने आकर हम आत्माओं को दुखों से मुक्त किया था. द्वापर में सबसे पहले राजा विक्रमादित्य सोमनाथ का मंदिर बनाकर परमपिता-परमात्मा शिव की पूजा आरंभ करते हैं.

शिवबाबा ने बताया हैं की यही ब्रहमाबाबा की आत्मा, सतयुग-त्रेता के 20 जन्म संपूर्ण सुख भोग कर, द्वापर में राजा विक्रमादित्य के रुप में भक्ति शुरू करने की भी निमित बनती हैं. इस तरह से एक ही आत्मा जो श्रीकृष्ण के रूप में संपूर्ण सतोप्रधान पूज्य थी वही आत्मा राजा विक्रमादित्य के रूप में द्वापर से पुजारी बनती हैं. यहीं आत्मा कलियुग के अन्त में संपूर्ण तमोप्रधान बनकर अपने 84 जन्म पूरा करती हैं तब ज्ञानसागर परमपिता-परमात्मा शिव परमधाम से आकर इनके शरीर में प्रवेश करते हैं (यानी परमपिता-परमात्मा शिव इनके शरीर को अपना रथ बनाते हैं) और संगमयुग प्रारंभ होता हैं. परमपिता-परमात्मा ही इनका नाम ब्रह्मा रखते हैं और ये महान ज्ञान-रुद्र-यज्ञ की स्थापना करते हैं.

ॐ शांति.